P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणामों एवं मूल्यांकन पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन

गुरविन्दर कौर
प्राचार्या,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
गुरु गोबिन्द सिंह कालेज आफ एजूकेशन, मलौट,
पंजाब

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक एवं चिन्तनशील प्राणी हैं। मनुष्य के जीवन का वास्तविक आरम्भ शिक्षा को ही माना जाता है। शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत तथा विकसित कहे जाने वाले समाज का आवश्यक लक्षण हैं। शिक्षा तथा मानव का चिरस्थायी सम्बन्ध है।

आज के आधुनिक एवं प्रतियोगितावादी युग में देश में अनेक शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध है तथा विद्यालयी स्तर पर ही अनेकों अनेक वैकल्पिक बोर्ड व विद्यालय उपस्थित है किन्तु क्या ये विद्यालय छात्रों के बुद्धि व व्यक्तित्व पूर्ण विकास करने में सक्षम है ? क्या ये विद्यालय छात्रों के सम्पूर्णता के आधार पर मूल्यांकन करने में सक्षम है ? सिर्फ विद्यालय क्या मूल्यांकन किताबी ज्ञान के आधार पर ही करते हैं अथवा कोई अन्य माध्यम भी है मूल्यांकन का ?

उपर्युक्त प्रश्नों के प्रकाश में शोध समस्या माध्यम से यह पता लगाना आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न नियामक संस्थाओं के नियंत्रण में संचालित विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यांकन का क्या तरीका है तथा यह किस सीमा तक तथ्य संगत है ?

वास्तव में परीक्षा परिणाम व मूल्यांकन पद्धति के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि विद्यालय से सम्बन्धित बोर्ड केवल किताबी ज्ञान को ही महत्व देते हैं अथवा पाठय सामग्री क्रियाओं इत्यादि को भी मूल्यांकन में सम्मिलित करते हैं।

मुख्य शब्दः माध्यमिक शिक्षा परिषद, परीक्षा परिणाम, मूल्यांकन पद्धति।

प्रस्तावना

व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास हेतु शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में विश्व में घटित हो रही तमाम घटनाओं को व्यक्ति तभी समझ सकता है तथा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है जब व्यक्ति स्वयं शिक्षित हो। शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिससे व्यक्ति व राष्ट्र संपूर्ण विश्व पर अपना दबदबा बना सकता है।

"Education is the most powerfull weapon which you can use to change the world.

-Nalson Mandela

शिक्षा एक वैश्विक विषय के रूप में संपूर्ण विश्व में विद्यमान है। मार्च १९९० में एजूकेशन फार आल (सबके लिए शिक्षा) विषय पर संगोष्ठी में थाईलैंड में यह प्रण किया गया था कि 2000 तक संपूर्ण विश्व में सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाएगा।

विश्व में शिक्षा का प्रचार प्रसार तो अत्यंत विस्तृत स्तर पर किया जा रहा है। भारत भी प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के उन्नयन व विकास हेतु तत्पर है। सर्व शिक्षा अभियान, मध्यान्ह भोजन योजना इत्यादि शिक्षा के विस्तार हेतु किए गए विशेष प्रयास हैं जिनके द्वारा केन्द्र सरकार प्रत्येक राज्य सरकारें शत प्रतिशत शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं।

देश में माध्यमिक शिक्षा अथवा विद्यालयी शिक्षा के संचालन हेतु विभिन्न परिषद हैं, जिनसे मान्यता प्राप्त करने के उपरान्त ही विद्यालयी शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से होता है। लगभग दो सौ वर्षों की ब्रिटिश दासता के उपरान्त मुक्त हुए स्वाधीन भारत द्वारा सर्व प्रथम दो प्रमुख कार्य किए गए। (१) शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन (२) शिक्षा के अवसरों का विस्तार।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न आयोगों, समितियों व नीतियों का निर्माण किया गया जो वास्तव में कारगर साबित हुआ। इसके उपरान्त वर्तमान में भारत में प्रत्येक छात्र व अभिभावकों के समक्ष अनेकों अनेक अवसर उपलब्ध हैं। छात्रों एवं अभिभावकों के लिए गुणात्मक शिक्षा वह शिक्षा व्यवस्था है– जिसके द्वारा छात्रों को पाठ्यक्रम के ज्ञान के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र का भी ज्ञान हो तथा उनके संपूर्ण व्यक्तित्व में शिक्षा सहायक हो।

भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में अपना स्वयं का लोकल बोर्ड है तथा ये सभी राजकीय बोर्ड भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं–

1. माध्यमिक शिक्षा परिषद बिहार
2. माध्यमिक शिक्षा परिषद आंध्र प्रदेश
3. माध्यमिक शिक्षा परिषद असम
4. माध्यमिक शिक्षा परिषद गुजरात
5. हरियाणा शिक्षा परिषद
6. माध्यमिक शिक्षा परिषद मध्य प्रदेश
7. माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश
8. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई)
9. इंडियन काउंसिल आफ सेकेन्ड्री एजूकेशन (आईसीएसई)
10. इंटरनेशनल बाकुलेर्ट आर्गेनाइजेशन (आईबीओएस)

भारत में राज्यों के केवल बोर्ड के अतिरिक्त अधिकांशतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) इँडियन काउंसिल आफ सेकेन्ड्री एजूकेशन (आईसीएसई) के ही विद्यालय विद्यमान हैं।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मुख्य रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति व अंकों के विवरण पर अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य को करने के पूर्व शोधकर्ता के समक्ष शोध से संबंधित उद्देश्य आवश्यक होता है जिससे वह शोध कार्य को तत्परता व लगनपूर्वक पूर्ण करने का प्रयास करता है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति का पता लगाना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणाम का पता लगाना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में सार्थक अंतर है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति में सार्थक अंतर है।

संबंधित साहित्य

पूर्व में प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित शोध कार्यों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है। वास्तव में प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित बहुत ही नगण्य कार्य हुए हैं। अतः कुछ सरकारी दस्तावेजों व रिपोर्टों के आधार पर अध्ययन का प्रयास किया गया।

1. नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) के द्वारा शिक्षा के बदलते परिवेश पर सुझाव प्रस्तुत किए गए।
2. 1999 में एनसीईआटी (राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद) द्वारा पाठ्यक्रम में विस्तृत रूप से बदलाव किए गए तथा बौद्धिक स्तर के कार्यों पर बल दिया गया।
3. नवंबर 2000 में एऩसीईआरटी द्वारा एनसीएफएससी (नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फार स्कूल एजूकेशन) की रिपोर्ट प्रकाशित की गई जिसमें विद्यालयों में पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण था।
4. एनसीएफ (नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क) 2005 की रिपोर्ट में अभी तक का सबसे विस्तृत शैक्षिक पाठ्यक्रम उपलब्ध है। इसमें पाठ्यक्रम निर्माण के पांच प्रमुख सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं तथा मूल्यांकन व पाठ्यक्रम के महत्व का भी विस्तृत विवरण है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य निर्धारित है। विद्यार्थियों के मूल्यांकन पद्धति हेतु सर्वेक्षण तथा वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है जो पूर्णतया वैज्ञानिक विधि है।

शोध – (Res Design)

शोध में मुख्य रूप से सर्वेक्षण व वर्णात्मक शोध का प्रयोग किया गया है जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विधि है।

न्यादर्श

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल जनपद कानपुर के 5 माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश व 5 केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों को चयनित किया गया है।
2. शोध अध्ययन में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के क्रमशः 125–125 छात्र छात्राएं अर्थात कुल 500 छात्र छात्राएं न्यादर्श के रूप में चयनित किए गए हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा अज्ञात तत्व संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के कतिपय यंत्रों व उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते हैं। शोधकत्री द्वारा साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों के उतर व परीक्षा परिणामों के अंकपत्रों का सूक्ष्म अध्ययन, तालिका निर्माण द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यकीय विधियां

न्यादर्श में कुल शिक्षकों के मध्यमान व मानक विचलन तथा प्रमाणिक त्रुटि व कान्तिक निष्पत्ति ज्ञात की गई है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका संख्या –1
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन

क.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	Sed.	क्रान्तिक
01	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	81.76	13.83	2.54	4.46
02	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	76.82	16.78		

तालिका संख्या–1 से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणामों का परीक्षण करने के उपरान्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 81.76 व 76.82 और मानक विचलन क्रमशः 13.83 व 16.78 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 2.54 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.56 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के परीक्षा परिणामों में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका संख्या –2
उत्तीर्ण (परीक्षा परिणाम प्रतिशत में)

क.सं.	क्षेत्र	2012	2013	2014	2015
01	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिशद	98.65	98.40	98.31	96.29
02	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिशद	78.00	78.90	80.10	98.91

परिकल्पना संख्या–1

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में सार्थक अंतर है, सत्यापित की जाती है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद विद्यालयों के परीक्षा परिणामों में उत्तीर्ण छात्रों के प्रतिशत में ०.०५ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. सीबीएसई व यूपी बोर्ड के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण छात्रों एवं परीक्षा परिणाम के प्रतिशत के आधार पर यह स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा शिक्षा परिषद में उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत अत्यंत कम है इसके अनेक कारण हो सकते हैं।

अ) उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद में प्रत्येक दो वर्ष में पाठ्यक्रम का बदलाव छात्रों के लिए परेशानी उत्पन्न कर रहा है। इसके अतिरिक्त सख्ती से अंकों का वितरण व शिक्षकों की एक मनोदशा से ग्रस्त होना ही यूपी बोर्ड के छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत को कम कर रहा है।

ब) सीबीएसई बोर्ड से संबद्ध केन्द्रीय जवाहर नवोदय विद्यालय देश के उच्च स्तरीय विद्यालय हैं। अतः इनका परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहता है जबकि उत्तर..... के विद्यालयों में छात्रों की पढ़ाई पर कम ध्यान देने के कारण भी ये परिणाम प्राप्त होते हैं।

स) यद्यपि उत्तर प्रदेश में राजनैतिक हस्तक्षेप व अन्य दबाव के कारण परीक्षा परिणाम पिछले कुछ वर्षों में अच्छा रहा है, बोर्ड की कापियां जांचने वाले शिक्षकों के गोपनीय साक्षात्कार द्वारा यह चौकाने वाले तथ्य सामने आए कि कुछ विशिष्ट पार्टियां जीत के लोभ के कारण, बोर्ड स्तर पर अधिक उत्तीर्ण परिणाम देने पर जोर देते हैं।

द) सीबीएसई बोर्ड के परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर अधिक बल दिया जाता है जबकि यूपी बोर्ड के परीक्षा में दीर्घ उत्तरीय पर। यूपी बोर्ड में छात्रों के साक्षात्कार द्वारा यह तथ्य सामने आए कि शिक्षक लंबे लंबे उत्तर देने व कापियां भरने पर जोर देते हैं।

ग्राफ संख्या–1
Graph No. 1

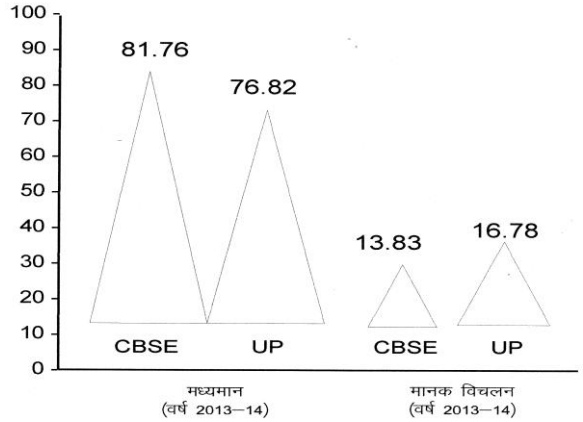

तालिका संख्या –3
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के अंकों के वितरण का तुलनात्मक अध्ययन

क.सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	Sed.	क्रान्तिक
01	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	82.85	16.69		2.85
02	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद	125	76.85	16.78		

तालिका संख्या–2 से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणामों का परीक्षण करने के उपरान्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 82.85 व 76.82

और मानक विचलन क्रमशः 16.69 व 16.78 पाया गया। दोनों के मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है अथवा नहीं के लिए क्रांतिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 2.85 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारिणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 से अधिक एवं 2.56 से अधिक पाया गया। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अंकों के वितरण में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गय।

अतः परिकल्पना संख्या–२ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद में अंकों के मूल्यांकन पद्धति में सार्थक अंतर है–स्वीकृत की जाती है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में मूल्यांकन पद्धति में ०.०१ स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं।

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति के परीक्षण हेतु संबंधित विद्यालयों की अंक तालिका एवं शिक्षकों के साक्षात्कार द्वारा यह बात संज्ञान में आई कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद में मूल्यांकन का आधार अंक ही होते हैं किन्तु अंकों को ग्रेड के रूप में प्रदान किया जाता है। जैसे– ए, बी, सी, डी, ई... जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद में मूल्यांकन हेतु अंक ही प्रदान किए जाते हैं, ग्रेड प्रदान करने का कोई नियम नहीं है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाओं व विद्यालय की आंतरिक गतिविधियों के प्रदर्शन के आधार पर संपूर्ण रूप से मूल्यांकन किया जाता है जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में पाठ्यक्रम से संबंधित मुख्य विषयों पर ही प्रमुख रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
3. मूल्यांकन पद्धति के आधार पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों की तुलना अधिक बेहतर स्थिति मे पाए गए।
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध विद्यालयों में छात्रों के ज्ञान, अवबोध, चिन्तन शक्ति, व्यक्तित्व, तर्क शक्ति, रुचि, भविष्य के अवसरों में सफलता प्रतिशत इत्यादि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया जाता है जबकि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के छात्र किताबी ज्ञान तक ही सीमित होते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के मूल्यांकन पद्धति में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता

किसी भी राष्ट्र के उत्थान में विद्यालयी शिक्षा का विशेष योगदान होता है। स्वतंत्रता के उपरान्त भारत मे अनेक राज्य स्तरीय बोर्ड व माध्यमिक केन्द्रीय शिक्षा परिषद का गठन हुआ। अतः यह शोध प्रपत्र मुख्य रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों के परीक्षा परिणाम व मूल्यांकन पद्धति के तुलनात्मक अध्ययन से प्रस्तुत करता है।

बालकों की शिक्षा व शिक्षा के साथ ही मूल्यांकन का सही दिशा व रीति से किया जाना कहीं अधिक आवश्यक है। आज के प्रतियोगी युग में प्रत्येक वस्तु के अनेक विकल्प उपस्थित हैं। अतः ऐसी स्थिति में यह प्रपत्र छात्रों व अभिभावकों को विद्यालय के चुनाव में सहायक सिद्ध होगा तथा शोध द्वारा संबंधित विद्यालयों से संबद्ध परिषदों में व्याप्त मूल्यांकन पद्धति कमियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है जो मूल्यांकन पद्धति को राज्य सरकार को शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन दिशा प्रदान करेगा।

शोधकारी द्वारा किए गए शोध कार्य को अध्ययन, अनुभव, साक्षात्कार व अथक प्रयासों के आधार पर क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। अनुसंधान एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी का भविष्य निर्माण किया जाता है।

सुझाव

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों की स्थापना केन्द्रीय कर्मचारियों व अधिकारियों के बच्चों के पठन पाठन के उद्देश्य से ही किया गया था अतः इन विद्यार्थियों में छात्रों को किताबी ज्ञान के अतिरिक्त पाठ्य सहगामी क्रियाओं की ओर भी प्रेरित किया जाता है अतः छात्रों का सम्पूर्ण विकास होता है तथा मूल्यांकन भी इसी आधार पर होता है जबकि यू0पी0बोर्ड के विद्यालयों में मात्र किताबी ज्ञान केन्द्रित मूल्यांकन ही किया जाता है।

अतः दोनो ही बोर्डो के छात्रों की सम्पूर्णता को ध्यान में रखते हुए पाठयक्रम व मूल्यांकन पद्धति पर नवीन नीति का निर्धारण करना चाहिये जो आज के प्रतियोगितावादी युग में छात्रों को प्रत्येक स्तर पर कठिन प्रतियोगिता हेतु सक्षम व सामर्थ्य प्रदान करे।

विभिन्न कमीशनों व कमेटियों के सुझावों के उपरान्त भी पाठय सहगामी क्रियाओं को स्कूली शिक्षा में विशिष्ट महत्व प्राप्त नही हो सका। तदुपरान्त स्वतंत्रता के उपरान्त इस क्षेत्र में कई नवीन शोधों ने पाठय सहगामी क्रियाओं की ओर ध्यान केन्द्रित किया।

देसाई (1963) ने 'भारत में बालिकाओं हेतु शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता' विषय पर शोध किया।

अगरकर (1947) ने पाठय सहगामी क्रिया में शारीरिक शिक्षा के रूप में लोकनृत्य (Folk Dance) को महत्वपूर्ण बताया।

चतुर्वेदी (1957) ने प्राथमिक विद्यालयों में क्राफ्ट (Craft) को पाठय सहगामी क्रिया में विशिष्ट स्थान प्रदान करने पर बल दिया।

पानी (1969) ने अपने शोध द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि पाठय सहगामी क्रियाओं में सहभागिता व

सफलता से छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहायता प्राप्त होती है अतः पाठय सहगामी क्रियाएं विद्यालयी शिक्षा का आवश्यक अंग है।

गोपी (1981) ने (इलाहाबाद) माध्यमिक विद्यालयों में खेल व शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया।

उपर्युक्त समस्त अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता हे कि विद्यालयी शिक्षा में पाठय सहगामी क्रियायें छात्रों व्यक्तित्व विकास व सफलता हेतु सम्बन्धित कारण है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित तथा मान्यता प्राप्त बोर्ड।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा शिक्षा हेतु मान्यता प्राप्त बोर्ड जिसके अधीन राज्य के सम्बन्धित विद्यालय आते हैं तथा पाठयक्रम व अन्य नियम इत्यादि भी बोर्ड द्वारा ही निर्धारित किये जाते हैं।

परीक्षा परिणाम

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद व उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषदों के विद्यालयों के छात्रों को विभिन्न विषयों के अंकों की अंक तालिका का अध्ययन।

मूल्यांकन पद्धति

मूल्यांकन पद्धति से तात्पर्य दोनो ही बोर्ड के अंक प्रदान करने व कापिंया जांचने के विधि से सम्बन्धित हैं।

तुलनात्मक अध्ययन

उपर्युक्त दोनो ही माध्यमों के विद्यालयों के परीक्षा परिणामों व मूल्यांकन पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'मोनल जे.एस (1964)–इंडियन साइंस आफ एजूकेशन रिसर्च', यूरेशिया पब्लिसिंग हाउस आफ प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ–159।
2. 'शर्मा आर.ए. और शिक्षा चतुर्वेदी (1994)–निर्देशन तथा परामर्श', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ–192–193।
3. 'सिंह कर्ण (1946)–भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं' गोविन्द्र प्रकाशन लखीमपुर खीरी, पृष्ठ–201।
4. 'रामकृष्ण नैया डी. (1980) द्वारा एम.वी. बुच, थर्ड सर्वे रिसर्च इन एजूकेशन', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
5. सीबीएसई विद्यालयों की मूल्यांकन पद्धति की जानकारी, विद्यालय में उपलब्ध अंक पत्रों द्वारा।
6. परीक्षा परिणाम का इंटरनेट के माध्यम से विश्लेषण।
7. विद्यालयों (सीबीएसई व यूपी बोर्ड) में उपलब्ध छात्रों के अंक पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन।